Toppersnotes
Unleash the topper in you

1st - ग्रेड

अर्थशास्त्र

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

पेपर 2 || भाग - 1

SIERRA INNOVATIONS

Index

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
1.	**अर्थशास्त्र की प्रकृति और दायरा** ➢ अर्थशास्त्र का अर्थ और प्रकृति ➢ विषय वस्तु और शाखाएँ: सूक्ष्मअर्थशास्त्र और समष्टिअर्थशास्त्र ➢ सकारात्मक और मानक अर्थशास्त्र: विशिष्टता, प्रासंगिकता और नीतिगत भूमिका ➢ अर्थव्यवस्था की केंद्रीय समस्याएं: कमी, विकल्प और संसाधन आवंटन ➢ उत्पादन संभावना सीमा (पीपीएफ): अवधारणा, बदलाव और अनुप्रयोग ➢ आर्थिक विश्लेषण में अर्थ, प्रासंगिकता और अनुप्रयोग ➢ आर्थिक प्रणालियाँ: पूंजीवाद – प्रकृति, तंत्र और मूल्यांकन ➢ आर्थिक प्रणालियाँ: समाजवाद – केंद्रीय योजना, विशेषताएँ और आलोचना ➢ आर्थिक प्रणालियाँ: मिश्रित अर्थव्यवस्था - संरचना, तर्क और भारतीय मॉडल ➢ आर्थिक प्रणालियों का तुलनात्मक और एकीकृत सारांश और इकाई का सैद्धांतिक एकीकरण	1
2.	**बुनियादी सांख्यिकी** ➢ सांख्यिकी का परिचय: अर्थ, प्रकृति, दायरा और महत्व ➢ डेटा का संग्रहण: विधियाँ, स्रोत और नमूनाकरण तकनीकें ➢ डेटा का संगठन: वर्गीकरण, सारणीकरण और आवृत्ति वितरण ➢ डेटा की प्रस्तुति: आरेख और ग्राफ़ ➢ केंद्रीय प्रवृत्ति के उपाय: अवधारणा और महत्व ➢ अंकगणितीय माध्य: गणना और उपयोग ➢ माध्यिका और बहुलक: अवधारणाएँ और गणना ➢ फैलाव के उपाय: अवधारणा, महत्व और प्रकार ➢ फैलाव के उपाय: अवधारणा, महत्व और प्रकार ➢ मानक विचलन और प्रसरण: गणना और व्याख्या ➢ सहसंबंध विश्लेषण: अर्थ, प्रकार और विधियाँ ➢ प्रतिगमन विश्लेषण: अर्थ, समीकरण और उपयोग ➢ सूचकांक संख्याएँ: अवधारणा, प्रकार और निर्माण विधियाँ ➢ सूचकांक संख्याओं की समस्याएं और उपयोग ➢ आर्थिक विश्लेषण में सांख्यिकीय अनुप्रयोग ➢ संशोधन + PYQ एकीकरण + तुलनात्मक सारांश	30
3.	**उन्नत सांख्यिकीय और अर्थमितीय उपकरण** ➢ प्रस्तावना और समीक्षा ➢ समय श्रृंखला विश्लेषण: अवधारणा, परिभाषा और महत्व ➢ समय श्रृंखला और अपघटन के घटक ➢ प्रवृत्ति का मापन: ग्राफ़िकल, चल औसत, अर्ध-औसत, न्यूनतम वर्ग ➢ मौसमी विविधताएँ: अवधारणा और माप ➢ अंतर्वेशन: अवधारणा, विधियाँ और आर्थिक अनुप्रयोग	58

	➢ एक्सट्रपलेशन: अवधारणा, विधियाँ और अनुप्रयोग ➢ प्रतिगमन विश्लेषण (उन्नत): बहुल और डमी चर, आर्थिक अनुप्रयोग ➢ सहसंबंध विश्लेषण (उन्नत): आंशिक, बहु, और रैंक सहसंबंध ➢ अनुमान सिद्धांत: जनसंख्या पैरामीटर, नमूना आँकड़े और विधियाँ ➢ परिकल्पना परीक्षण: अवधारणा, शून्य और वैकल्पिक, त्रुटियाँ ➢ अर्थशास्त्र में सांख्यिकी का अनुप्रयोग: एकीकृत उपयोग ➢ संशोधन और तुलनात्मक सारांश ➢ एकीकृत संशोधन और परीक्षा फोकस	
4.	**उपभोक्ता व्यवहार और मांग विश्लेषण** ➢ उपभोक्ता व्यवहार की अवधारणा, अर्थ और दायरा ➢ उपयोगिता: अर्थ, प्रकार और माप ➢ कार्डिनल उपयोगिता विश्लेषण: घटती सीमांत उपयोगिता का नियम और सम-सीमांत उपयोगिता का नियम ➢ क्रमिक उपयोगिता एवं उदासीनता वक्र विश्लेषण: अर्थ, मान्यताएँ और मूल गुण ➢ उदासीनता मानचित्र एवं प्रतिस्थापन की सीमांत दर: आकार, ढलान और महत्व ➢ उदासीनता वक्र के अंतर्गत उपभोक्ता संतुलन: बजट रेखा, MRS, और मूल्य अनुपात की स्थिति ➢ मूल्य, आय और प्रतिस्थापन प्रभाव: हिक्सियन और स्लटस्की अपघटन ➢ मांग का नियम: अर्थ, व्युत्पत्ति और अपवाद ➢ मांग की लोच: अवधारणा, प्रकार और मापन ➢ मांग की लोच मापने के तरीके: कुल परिव्यय, बिंदु, चाप और ज्यामितीय दृष्टिकोण ➢ मांग की लोच के अनुप्रयोग: प्रबंधकीय, कल्याण और नीतिगत निहितार्थ ➢ उपभोक्ता अधिशेष: मार्शलियन और हिक्सियन दृष्टिकोण, मापन और आलोचना ➢ व्यवहारिक अर्थशास्त्र और उपभोक्ता सिद्धांत का आधुनिक विस्तार ➢ संपूर्ण इकाई का सारांश एकीकरण	
5.	**उत्पादन और लागत का सिद्धांत** ➢ उत्पादन फलन की अवधारणा, अर्थ और दायरा ➢ अल्पावधि और दीर्घावधि उत्पादन कार्य ➢ परिवर्तनशील अनुपात का नियम: अर्थ, चरण और अनुप्रयोग ➢ पैमाने पर प्रतिफल: अवधारणा, कारण और ग्राफ़िकल विश्लेषण ➢ कोब-डगलस उत्पादन कार्य: रूप, गुण और अनुभवजन्य उपयोग ➢ आइसोक्वांट्स: अर्थ, गुण और तकनीकी प्रतिस्थापन की सीमांत दर ➢ आईएसओ लागत लाइनें और उत्पादक संतुलन: न्यूनतम लागत संयोजन और विस्तार पथ ➢ पैमाने की मितव्ययिताएँ और विषमताएँ: आंतरिक, बाह्य और प्रबंधकीय आयाम ➢ लागत अवधारणाएँ: लेखांकन, आर्थिक, अवसर, स्पष्ट और अंतर्निहित लागतें ➢ अल्पावधि लागत वक्र: आकार, संबंध और उत्पादन कानूनों से व्युत्पन्न ➢ दीर्घकालिक लागत वक्र: लिफ़ाफ़ा अवधारणा, LAC, LMC, और पैमाने की अर्थव्यवस्थाएँ ➢ राजस्व अवधारणाएँ: कुल, औसत और सीमांत राजस्व और उनके अंतर्संबंध	

6.	**कारक मूल्य निर्धारण** ➢ कारक मूल्य निर्धारण का अर्थ, दायरा और महत्व ➢ मजदूरी के सिद्धांत: शास्त्रीय दृष्टिकोण - निर्वाह, मजदूरी निधि और जीवन स्तर के सिद्धांत ➢ मजदूरी का सीमांत उत्पादकता सिद्धांत: अवधारणा, मान्यताएँ और आरेखीय विश्लेषण ➢ मजदूरी का सीमांत उत्पादकता सिद्धांत: आलोचनाएँ, आधुनिक संशोधन और मांग-आपूर्ति एकीकरण ➢ मजदूरी का आधुनिक सिद्धांत: मांग-आपूर्ति संतुलन, वास्तविक बनाम नाममात्र मजदूरी, और श्रम बाजार की गतिशीलता ➢ रेंट: रिकार्डियन सिद्धांत - अवधारणा, मान्यताएँ, विभेदक रेंट और आरेखीय विश्लेषण ➢ किराये के आधुनिक सिद्धांत: अर्ध-किराया, स्थानांतरण आय और आर्थिक किराया ➢ रुचि: शास्त्रीय सिद्धांत - वास्तविक शक्तियाँ, बचत-निवेश संतुलन, और आलोचनाएँ ➢ रुचि: कीनेसियन और तरलता वरीयता सिद्धांत ➢ रुचि: कीनेसियन और तरलता वरीयता सिद्धांत ➢ ब्याज: आधुनिक ऋण योग्य निधि सिद्धांत – वास्तविक और मौद्रिक कारकों का एकीकरण ➢ लाभ: अर्थ, प्रकृति और माप ➢ लाभ के सिद्धांत: जोखिम और अनिश्चितता – एफबी हॉले और एफएच नाइट ➢ लाभ के सिद्धांत: नवाचार और गतिशील सिद्धांत – जेए शुम्पीटर और जेबी क्लार्क ➢ कारक मूल्य निर्धारण सिद्धांतों का एकीकरण और तुलनात्मक अध्ययन: मजदूरी, किराया, ब्याज और लाभ	

1
UNIT

अर्थशास्त्र की प्रकृति और दायरा

अर्थशास्त्र का अर्थ और प्रकृति

I. अर्थशास्त्र का अर्थ

A. व्युत्पत्ति

- ग्रीक शब्द **" ओइकोस " (घरेलू)** और **" नेमेइन " (प्रबंधन) से व्युत्पन्न** ।
- अर्थशास्त्र का मूल अर्थ घरेलू प्रबंधन या दुर्लभ संसाधनों का प्रशासन था।

B. मूल अर्थ

- अर्थशास्त्र वस्तुओं और सेवाओं के **उत्पादन, वितरण, विनिमय और उपभोग** से संबंधित **मानव व्यवहार का अध्ययन है।**
- फोकस: व्यक्ति और समाज असीमित आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए दुर्लभ संसाधनों का आवंटन कैसे करते हैं।

II. आर्थिक विचार का विकास

A. शास्त्रीय अर्थशास्त्र (1776-1870)

- **फोकस:** धन और उत्पादन।
- **प्रमुख अर्थशास्त्री:**
  - **धन** के विज्ञान के रूप में अर्थशास्त्र ।
  - डेविड रिकार्डो - तुलनात्मक लाभ, वितरण सिद्धांत।
  - जेबी से - से का बाज़ार का नियम।
- **प्रकृति:** अहस्तक्षेप, मुक्त बाजार, तर्कसंगत मनुष्य (होमो इकोनोमिकस)।
- **आलोचना:** कल्याण और सामाजिक पहलुओं की अनदेखी की गई।

B. नव-शास्त्रीय स्कूल (1870-1930)

- **फोकस:** उपयोगिता और संतुलन के माध्यम से कल्याण।
- **प्रमुख व्यक्ति:** अल्फ्रेड मार्शल, पिगौ, वाल्रास , जेवन्स।
- **मार्शल की परिभाषा:** "अर्थशास्त्र जीवन के सामान्य व्यवसाय में मानव जाति का अध्ययन है।"
- **कल्याण** , **आंशिक संतुलन** और **सूक्ष्म नींव** पर जोर ।
- धन से कल्याण की ओर बदलाव।

C. आधुनिक/कमी की परिभाषा (1932 से आगे)

- **लियोनेल रॉबिन्स** - आर्थिक विज्ञान की प्रकृति और महत्व पर निबंध (1932):
  "अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जो मानव व्यवहार का अध्ययन साध्य और वैकल्पिक उपयोग वाले दुर्लभ साधनों के बीच संबंध के रूप में करता है।"
- **मुख्य अवधारणाएँ:** कमी, विकल्प, अवसर लागत।
- **प्रकृति:** सकारात्मक एवं विश्लेषणात्मक विज्ञान, मूल्य-तटस्थ।

D. वृद्धि और विकास की परिभाषा (द्वितीय विश्व युद्ध के बाद)

- **पॉल सैमुएलसन** - अर्थशास्त्र इस बात का अध्ययन है कि मनुष्य और समाज, धन के उपयोग के साथ या उसके बिना, समय के साथ उत्पादन और वितरण का निर्धारण करने के लिए दुर्लभ उत्पादक संसाधनों का उपयोग कैसे करते हैं।
- विकास के **विकास** , **वितरण** और **गतिशील पहलू** शामिल हैं ।
- सूक्ष्म और स्थूल दोनों आयामों को एकीकृत करता है।

III. अर्थशास्त्र की प्रकृति

A. अर्थशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान के रूप में

- **मानव व्यवहार** और **सामाजिक संस्थाओं** (बाजार, परिवार, राज्य) का अध्ययन करता है ।
- **कार्यप्रणाली:** अवलोकन, निगमन और आगमन।
- प्राकृतिक विज्ञानों की तरह प्रयोग नहीं किया जा सकता; तार्किक तर्क पर निर्भर करता है।

B. अर्थशास्त्र एक सकारात्मक विज्ञान के रूप में
- **"क्या है"** का वर्णन और व्याख्या करता है - तथ्य, कारण, संबंध।
- उदाहरण: मांग पर कर वृद्धि का प्रभाव।

C. अर्थशास्त्र एक मानक विज्ञान के रूप में
- **"क्या होना चाहिए"** निर्धारित करता है - मूल्य निर्णय, कल्याण विश्लेषण।
- उदाहरण: सरकार को असमानता कम करनी चाहिए।

D. अर्थशास्त्र एक कला के रूप में
- वास्तविक जीवन की समस्याओं को हल करने के लिए सिद्धांतों का अनुप्रयोग।
- उदाहरण: सिद्धांत के आधार पर कर नीति या मौद्रिक नीति तैयार करना।

E. अर्थशास्त्र विज्ञान और कला दोनों के रूप में
- **विज्ञान:** सिद्धांत/नियम विकसित करता है।
- **कला:** आर्थिक कल्याण प्राप्त करने के लिए इनका प्रयोग किया जाता है।
- समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान, सांख्यिकी और मनोविज्ञान के साथ अंतःविषयक संबंध।

IV अर्थशास्त्र की विषयवस्तु

A. मुख्य क्षेत्र
1. **उपभोग** - आवश्यकताओं की संतुष्टि।
2. **उत्पादन** - वस्तुओं और सेवाओं का सृजन।
3. **विनिमय** - बाजार तंत्र और व्यापार।
4. **वितरण** - कारकों के बीच आय (मजदूरी, किराया, ब्याज, लाभ)।
5. **सार्वजनिक वित्त** - सरकार की भूमिका, कर, व्यय।

B. दायरा
- **सूक्ष्मअर्थशास्त्र** - व्यक्तिगत इकाइयाँ, मूल्य सिद्धांत, संसाधन आवंटन।
- **समष्टि अर्थशास्त्र** - समुच्चय, आय, रोजगार, विकास।
- **अंतर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र** - व्यापार, विनिमय दर, भुगतान संतुलन।
- **विकास अर्थशास्त्र** - गरीबी, असमानता, संरचनात्मक परिवर्तन।

V. अर्थशास्त्र की विशेषताएँ

A. मानव-केंद्रित
- अभाव के अंतर्गत मानव व्यवहार से चिंतित।

B. कमी-आधारित
- संसाधन सीमित हैं, इच्छाएं असीमित हैं।
- इससे चुनाव और प्राथमिकता तय करने में मदद मिलती है।

C. विश्लेषणात्मक और तार्किक
- कारण-प्रभाव संबंधों का विश्लेषण करने के लिए मॉडल और कानूनों का उपयोग करता है।

D. गतिशील और विकासशील
- तकनीकी, संस्थागत और वैश्विक परिवर्तनों के साथ बदलाव।

E. अंतःविषय
- राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र, पर्यावरण अध्ययन और मनोविज्ञान के साथ ओवरलैप।

VI. अर्थशास्त्र के दृष्टिकोण

A. धन दृष्टिकोण (शास्त्रीय)
- उद्देश्य: राष्ट्रीय धन का अधिकतम उपयोग।
- भौतिकवादी और संकीर्ण होने के लिए आलोचना की गई।

B. कल्याण दृष्टिकोण (नव-शास्त्रीय)
- फोकस: मानव कल्याण, न कि केवल धन।
- सामाजिक प्रासंगिकता का परिचय दिया।

C. कमी दृष्टिकोण (रॉबिन्स)
- फोकस: सार्वभौमिक समस्याएं के रूप में अभाव और विकल्प।
- विश्लेषणात्मक और वस्तुनिष्ठ.

D. विकास दृष्टिकोण (सैमुअलसन और कीनेसियन)
- फोकस: गतिशील प्रक्रिया, समय आयाम, नीति प्रासंगिकता।
- कल्याण को विकास के साथ एकीकृत करता है।

VII. अर्थशास्त्र: स्थैतिक बनाम गतिशील
A. स्थैतिक अर्थशास्त्र
- किसी समय बिंदु पर अर्थव्यवस्था का अध्ययन (अल्पकालिक संतुलन)।
- उदाहरण: मार्शल का संतुलन सिद्धांत।

B. गतिशील अर्थशास्त्र
- समय के साथ परिवर्तन का अध्ययन करें - आय, पूंजी, जनसंख्या।
- उदाहरण: रोजगार और आय निर्धारण का कीन्सियन विश्लेषण।

VIII. अर्थशास्त्र और मानव कल्याण
A. भौतिक बनाम अभौतिक कल्याण
- प्रारंभिक अर्थशास्त्री: केवल भौतिक कल्याण।
- आधुनिक अर्थशास्त्री: जीवन की गुणवत्ता, मानव विकास, पर्यावरणीय स्थिरता का समावेश।

B. आर्थिक कल्याण संकेतक
- प्रति व्यक्ति आय, मानव विकास सूचकांक, गिनी सूचकांक, स्थिरता सूचकांक।

C. संकीर्ण कल्याण दृष्टिकोण की आलोचना
- गैर-आर्थिक मानवीय उद्देश्यों और नैतिक आयामों की उपेक्षा करता है।

IX. अर्थशास्त्र की कार्यप्रणाली
A. निगमनात्मक विधि
- सामान्य → विशेष.
- उदाहरणार्थ, मांग के नियम से लेकर व्यक्तिगत बाजार भविष्यवाणी तक।

B. आगमनात्मक विधि
- विशेष → सामान्य.
- उदाहरणार्थ, अनुभवजन्य अनुसंधान से मैक्रो मॉडल का विकास।

C. आर्थिक मॉडल
- व्यवहार को समझाने के लिए सरलीकृत प्रतिनिधित्व (उदाहरणार्थ, आपूर्ति-मांग मॉडल)।

D. अनुभवजन्य सत्यापन
- अर्थमिति और सांख्यिकी के माध्यम से डेटा-आधारित विश्लेषण।

X. आधुनिक प्रासंगिकता और अनुप्रयोग
A. नीति डिजाइन
- राजकोषीय, मौद्रिक, व्यापार और विकास नीतियां।

B. निर्णय लेना
- कॉर्पोरेट, सरकारी और घरेलू स्तर पर।

C. संसाधन प्रबंधन
- इष्टतम आवंटन, स्थिरता और नवाचार।

D. वैश्विक प्रासंगिकता
- जलवायु अर्थशास्त्र को समझना ।

XI. त्वरित PYQ ट्रिगर पॉइंट
1. "अर्थशास्त्र जीवन के सामान्य व्यवसाय में मानव जाति का अध्ययन है" - यह किसने कहा? → **मार्शल**
2. अर्थशास्त्र के मूल के रूप में अभाव और विकल्प पर किसने जोर दिया ? **रॉबिंस**
3. अर्थशास्त्र को धन के अध्ययन के रूप में किसने परिभाषित किया ? **एडम स्मिथ**
4. कौन सा दृष्टिकोण भौतिक कल्याण से संबंधित है ? **नव-शास्त्रीय (मार्शल)**
5. विकास पर जोर देने वाली आधुनिक परिभाषा? → **सैमुएलसन**

XII. सारांश: कोर एकीकरण

- **अर्थशास्त्र = अभाव** के तहत मानव व्यवहार का अध्ययन , जिसमें **विकल्प** और **आवंटन शामिल है** ।
- **धन → कल्याण → अभाव → विकास के** दृष्टिकोण से विकसित होता है ।
- **सकारात्मक (विश्लेषण)** और **मानक (नीति)** आयाम शामिल हैं ।
- आर्थिक जीवन के संगठन को **समझने, समझाने और सुधारने के** लिए केंद्रीय ।

विषय वस्तु और शाखाएँ: सूक्ष्मअर्थशास्त्र और समष्टिअर्थशास्त्र

I. प्रस्तावना

A. अर्थशास्त्र विषयवस्तु

- इस बात से चिंतित हैं कि प्रतिस्पर्धी उद्देश्यों के बीच **दुर्लभ संसाधनों का आवंटन किस प्रकार किया जाता** है ।
- **व्यक्तिगत इकाइयों** (सूक्ष्मअर्थशास्त्र) और **समग्र व्यवहार** (समष्टिअर्थशास्त्र) का विश्लेषण शामिल है ।
- इस प्रकार अर्थशास्त्र दो परस्पर संबद्ध स्तरों पर संचालित होता है - व्यक्तिगत और समग्र।

II. सूक्ष्मअर्थशास्त्र: व्यक्तिगत इकाइयों का अध्ययन

A. अर्थ

- अर्थशास्त्र की वह शाखा जो **व्यक्तिगत आर्थिक इकाइयों का अध्ययन करती है** , जैसे:
  - उपभोक्ता व्यवहार
  - फर्म उत्पादन निर्णय
  - बाजार मूल्य निर्धारण
- यह छोटे चित्र पर ध्यान केंद्रित करता है - कि घरों और फर्मों द्वारा किस प्रकार चुनाव किए जाते हैं।

B. दायरा

1. **उपभोक्ता व्यवहार का सिद्धांत**
   - उपयोगिता विश्लेषण (मार्शल, हिक्स, सैमुएलसन)।
   - घटती सीमांत उपयोगिता का नियम, उदासीनता वक्र विश्लेषण।
   - मांग कानून और लोच अवधारणाएँ।
2. **उत्पादन और लागत का सिद्धांत**
   - अनुपात का नियम , पैमाने पर प्रतिफल, आइसोक्वेंट, लागत वक्र।
3. **मूल्य और उत्पादन निर्धारण का सिद्धांत**
   - पूर्ण प्रतियोगिता, एकाधिकार, एकाधिकार प्रतियोगिता, अल्पाधिकार ।
   - मूल्य तंत्र और बाजार संतुलन।
4. **वितरण सिद्धांत**
   - सीमांत उत्पादकता सिद्धांत - कारक पुरस्कारों का निर्धारण।
   - किराया, मजदूरी, ब्याज और लाभ सिद्धांत।
5. **कल्याण अर्थशास्त्र**
   - पेरेटो इष्टतमता, सामाजिक कल्याण, बाजार विफलता।

C. सूक्ष्मअर्थशास्त्र की मान्यताएँ

- अन्य बातें समान रहने पर **।**
- **तर्कसंगतता** - आर्थिक एजेंट संतुष्टि या लाभ को अधिकतम करते हैं।
- **पूर्ण जानकारी** और **प्रतिस्पर्धा** (सिद्धांत मॉडल में)।

D. प्रकृति

- **विश्लेषणात्मक, निगमनात्मक और व्यक्तिवादी।**
- संसाधन आवंटन, मूल्य निर्धारण, दक्षता विश्लेषण में सहायता करता है।

E. महत्व / उपयोग

- आर्थिक नीति का आधार (जैसे, मूल्य नियंत्रण, कराधान)।
- व्यावसायिक अर्थशास्त्र और प्रबंधकीय निर्णय लेने की नींव।
- बाजार की विफलताओं और उपभोक्ता कल्याण को समझना।

III. समष्टि अर्थशास्त्र: समुच्चयों का अध्ययन

A. अर्थ

- **समग्र चरों** से संबंधित अर्थशास्त्र की शाखा :
  - राष्ट्रीय आय
  - रोज़गार
  - मुद्रा स्फ़ीति
  - आर्थिक वृद्धि और विकास
- अर्थव्यवस्था का समग्र रूप से अध्ययन करें, व्यक्तिगत इकाइयों के रूप में नहीं ।

B. दायरा

1. **राष्ट्रीय आय का सिद्धांत**
   - मापन (जीडीपी, जीएनपी, एनएनपी, एनडीपी, आदि)।
   - आय और व्यय का चक्राकार प्रवाह।
2. **रोजगार और उत्पादन का सिद्धांत**
   - कीनेसियन और क्लासिकल मॉडल।
   - समग्र मांग और आपूर्ति; पूर्ण रोजगार।
3. **मौद्रिक अर्थशास्त्र**
   - मुद्रा आपूर्ति, मुद्रास्फीति, ब्याज दर, केंद्रीय बैंकिंग।
4. **राजकोषीय नीति**
   - सरकारी राजस्व एवं व्यय; घाटा एवं ऋण प्रबंधन।
5. **अंतरराष्ट्रीय अर्थशास्त्र**
   - भुगतान संतुलन, विनिमय दर, व्यापार नीति।
6. **आर्थिक वृद्धि और विकास**
   - दीर्घकालिक संरचनात्मक परिवर्तन; विकास मॉडल (हैरोड-डोमर , सोलो)।

C. प्रकृति

- **अनुभवजन्य, आगमनात्मक और नीति-उन्मुख।**
- सामान्य संतुलन और समुच्चयों से संबंधित है।

D. महत्व / उपयोग

- **व्यापक आर्थिक स्थिरीकरण** में मदद करता है - मुद्रास्फीति, बेरोजगारी पर नियंत्रण।
- **आर्थिक नीति नियोजन** और **राष्ट्रीय लेखांकन** की नींव ।
- चक्रीय उतार-चढ़ाव और दीर्घकालिक प्रवृत्तियों की व्याख्या करता है।

IV. सूक्ष्म और समष्टि अर्थशास्त्र के बीच अंतर

आधार	व्यष्टि अर्थशास्त्र	समष्टि अर्थशास्त्र
अर्थ	व्यक्तिगत इकाइयों (परिवारों, फर्मों) का अध्ययन	समग्र रूप से अर्थव्यवस्था का अध्ययन
केंद्र	मूल्य और उत्पादन निर्धारण	राष्ट्रीय आय, रोजगार, मुद्रास्फीति
औजार	आंशिक संतुलन विश्लेषण	सामान्य संतुलन और समग्र मॉडल
प्रकृति	व्यक्तिवादी, स्थिर	समग्र, गतिशील
प्रमुख अर्थशास्त्री	मार्शल	कीन्स
उदाहरण	चावल की कीमत कैसे निर्धारित होती है?	सामान्य मूल्य स्तर कैसे बदलता है (मुद्रास्फीति)
नीति का उपयोग	संसाधनों का आवंटन	राजकोषीय, मौद्रिक और विकास नीतियां

V. सूक्ष्म और समष्टि अर्थशास्त्र की अन्योन्याश्रयता

A. पूरक संबंध

- **मैक्रो की सूक्ष्म नींव:**
  - व्यक्तिगत व्यवहार पर आधारित समग्र मांग और आपूर्ति।
  - उदाहरण: राष्ट्रीय उपभोग = व्यक्तिगत उपभोग का योग।
- **सूक्ष्म की वृहत् नींव:**
  - समष्टि आर्थिक वातावरण व्यक्तिगत निर्णयों को प्रभावित करता है।
  - उदाहरण: मुद्रास्फीति उपभोक्ता व्यय और फर्म मूल्य निर्धारण को प्रभावित करती है।

B. आधुनिक अर्थशास्त्र में एकीकरण
- सैमुएलसन का संश्लेषण: "मैक्रो के बिना माइक्रो नहीं, माइक्रो के बिना मैक्रो नहीं।"
- **सामान्य संतुलन मॉडल** का उपयोग जो दोनों दृष्टिकोणों को एकीकृत करता है।

C. अनुप्रयोग
- नीति डिजाइन में सूक्ष्म और वृहद पहलुओं को सम्मिलित किया जाता है:
  - प्रतिस्पर्धा और बाजार विनियमन के लिए सूक्ष्म नीतियां।
  - विकास, स्थिरता और रोजगार के लिए वृहद नीतियां।

VI. दोनों को जोड़ने वाले प्रमुख सैद्धांतिक विकास

A. कीनेसियन क्रांति (1936)
- सूक्ष्म से वृहद फोकस की ओर बदलाव (रोजगार सिद्धांत)।
- समग्र मांग-समग्र आपूर्ति विश्लेषण प्रस्तुत किया गया।

B. मुद्रावादी और नए शास्त्रीय सिद्धांत
- वृहद व्यवहार (अपेक्षाएं, तर्कसंगत विकल्प) के सूक्ष्म आधारों पर जोर दें ।

C. आधुनिक संदर्भ में माइक्रो-मैक्रो एकीकरण
- व्यवहारिक अर्थशास्त्र मनोविज्ञान (सूक्ष्म) को नीति परिणामों (स्थूल) के साथ मिश्रित करता है।
- उदाहरण: राष्ट्रीय व्यय प्रवृत्तियों को प्रभावित करने वाला उपभोक्ता भावना सूचकांक।

VII. PYQ ट्रिगर ज़ोन
1. सूक्ष्मअर्थशास्त्र आंशिक संतुलन से संबंधित है जबकि समष्टि अर्थशास्त्र सामान्य संतुलन से संबंधित है - टिप्पणी करें।
2. समष्टि अर्थशास्त्र के बीच अंतर्संबंध को उदाहरण सहित समझाइए।
3. "सूक्ष्मअर्थशास्त्र" और "समष्टिअर्थशास्त्र" शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम किसने किया ? **राग्नार फ्रिस्क (1933)**
4. कीन्सियन अर्थशास्त्र मुख्य रूप से किस समस्या से संबंधित है ? **बेरोजगारी और आय निर्धारण**
5. "वास्तव में सूक्ष्म और स्थूल विश्लेषण के बीच कोई स्पष्ट विभाजन नहीं है" - यह किसने कहा था? → **एक्ले**

VIII. आधुनिक अनुप्रयोग और प्रासंगिकता

A. माइक्रोइकॉनॉमिक्स टुडे
- **प्रतिस्पर्धा नीति, पर्यावरण विनियमन और व्यवहार अर्थशास्त्र** में लागू ।
- **मूल्य निर्धारण रणनीति, लागत विश्लेषण और उपभोक्ता अनुसंधान** में फर्मों की सहायता करता है ।

B. मैक्रोइकॉनॉमिक्स टुडे
- **मौद्रिक नीति, राजकोषीय प्रोत्साहन, मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण और व्यापार चक्रों** के लिए केंद्रीय ।
- आईएमएफ, आरबीआई और विश्व बैंक के मॉडल समष्टि आर्थिक उपकरण हैं।

C. एकीकृत आर्थिक नीति ढांचा
- सूक्ष्म दक्षता + वृहद स्थिरता = सतत आर्थिक विकास।

IX. सारांश एकीकरण
- **सूक्ष्मअर्थशास्त्र:** व्यक्तिगत निर्णय लेना, दक्षता, संसाधन आवंटन।
- **समष्टि अर्थशास्त्र:** समग्र परिणाम, नीति, विकास और स्थिरता।
- दोनों **आपस में जुड़े हुए हैं** : माइक्रो आधार प्रदान करता है; मैक्रो संदर्भ प्रदान करता है।
- आधुनिक अर्थशास्त्र जटिल अर्थव्यवस्थाओं को समझने और प्रबंधित करने के लिए दोनों स्तरों को मिश्रित करता है।

सकारात्मक और मानक अर्थशास्त्र: विशिष्टता, प्रासंगिकता और नीतिगत भूमिका

I. प्रस्तावना

A. अवधारणा अवलोकन
- **वस्तुनिष्ठ विश्लेषण** (क्या है) और **मूल्य-आधारित निर्णय** (क्या होना चाहिए) दोनों शामिल हैं ।
- **सकारात्मक** और **मानक** अर्थशास्त्र के बीच का अंतर **कार्यप्रणाली, नीति निर्माण और आर्थिक दर्शन के लिए केंद्रीय है** ।

B. ऐतिहासिक उत्पत्ति
- **जे.एन. कीन्स (जे.एम. कीन्स के पिता)** द्वारा "राजनीतिक अर्थव्यवस्था का दायरा और विधि" (1891) में औपचारिक रूप से प्रस्तुत किया गया।
- **लियोनेल रॉबिंस (1932)** और **मिल्टन फ्रीडमैन (1953)** द्वारा विकसित किया गया ।
- आर्थिक जांच का पद्धतिगत आधार तैयार करता है।

II. सकारात्मक अर्थशास्त्र

A. अर्थ

- आर्थिक घटनाओं के **वस्तुनिष्ठ विश्लेषण** से संबंधित है ।
- बिना कोई निर्णय लिए "क्या है", "क्या था", या "क्या होगा" का वर्णन और व्याख्या करता है।
- कारण-और-परिणाम संबंधों पर ध्यान केंद्रित करता है।

B. प्रकृति

- **वर्णनात्मक** , **विश्लेषणात्मक** और **अनुभवजन्य** ।
- **तथ्यों** , **आंकड़ों** और **वैज्ञानिक अवलोकन** पर आधारित ।
- व्यक्तिगत राय या नैतिकता से स्वतंत्र।

C. दायरा और विधियाँ

1. **परिकल्पनाओं और सिद्धांतों का निर्माण**
   - उदाहरण: मांग का नियम - "अन्य चीजें समान होने पर, कीमत बढ़ने पर मांग की मात्रा कम हो जाती है।"
2. **अनुभवजन्य सत्यापन**
   - परिकल्पनाओं का सांख्यिकीय परीक्षण।
3. **भविष्यवाणी और स्पष्टीकरण**
   - उदाहरण: मुद्रा आपूर्ति में वृद्धि का मुद्रास्फीति पर प्रभाव का पूर्वानुमान लगाना।

D. उदाहरण

- ब्याज दरों में वृद्धि से निवेश व्यय कम हो जाता है।
- राजकोषीय घाटा मुद्रास्फीति संबंधी दबाव को जन्म देता है।
- भारत में 2024 में बेरोजगारी दर 8.2% होगी।

E. प्रमुख प्रस्तावक

- **लियोनेल रॉबिन्स:** "अर्थशास्त्र मानव व्यवहार का एक सकारात्मक विज्ञान है।"
- **मिल्टन फ्रीडमैन:** सकारात्मक अर्थशास्त्र को मूल्य-मुक्त और भविष्यसूचक बताया।

III. मानक अर्थशास्त्र

A. अर्थ

- अर्थव्यवस्था कैसी होनी चाहिए, इसके बारे में **मूल्य निर्णय** से चिंतित ।
- लक्ष्यों, नैतिकता और परिणामों की वांछनीयता से संबंधित है।
- कल्याण में सुधार चाहता है।

B. प्रकृति

- **निर्देशात्मक** , **दार्शनिक** और **नीति-उन्मुख** ।
- **नैतिक मूल्य** और **व्यक्तिपरक मूल्यांकन** शामिल है ।

C. दायरा और विधियाँ

1. **कल्याण और नीतिगत सिफारिशें**
   - उदाहरण: सरकार को असमानता कम करनी चाहिए।
2. **आर्थिक लक्ष्यों का मूल्यांकन**
   - समानता, सामाजिक न्याय, पर्यावरणीय स्थिरता।
3. **निर्णय लेने के मानदंड**
   - पेरेटो इष्टतमता, सामाजिक कल्याण फलन, लागत-लाभ विश्लेषण।

D. उदाहरण

- सभ्य जीवन सुनिश्चित करने के लिए न्यूनतम मजदूरी बढ़ाई जानी चाहिए।
- सरकार को गरीब बच्चों के लिए मुफ्त शिक्षा उपलब्ध करानी चाहिए।
- आय असमानता को कम करने के लिए कर प्रगतिशील होना चाहिए।

E. प्रमुख प्रस्तावक

- **ए.सी. पिगौ:** मानक अध्ययन के रूप में कल्याण अर्थशास्त्र की वकालत की।
- **अमर्त्य सेन:** क्षमता दृष्टिकोण - नैतिकता और मानव विकास पर जोर दिया।

IV. सकारात्मक और मानक अर्थशास्त्र के बीच अंतर

आधार	सकारात्मक अर्थशास्त्र	मानक अर्थशास्त्र
प्रकृति	वर्णनात्मक और तथ्यात्मक	निर्देशात्मक और निर्णयात्मक
चिंता	"क्या है" या "क्या होता है"	"क्या होना चाहिए"
मूल्य निर्णय	मूल्यों से मुक्त	नैतिक मूल्यों को शामिल करता है
निष्पक्षतावाद	उद्देश्य	व्यक्तिपरक
सत्यापन	अनुभवजन्य रूप से परीक्षण योग्य	गैर-परीक्षण योग्य, राय पर आधारित
केंद्र	स्पष्टीकरण और भविष्यवाणी	कल्याण और नीतिगत लक्ष्य
उदाहरण	उच्च मुद्रास्फीति क्रय शक्ति को कम करती है	सरकार को मुद्रास्फीति पर नियंत्रण रखना चाहिए
मुख्य प्रस्तावक	रॉबिन्स, फ्रीडमैन	पिगौ, सेन

V. संबंध और अन्योन्याश्रय

A. पूरक प्रकृति

- आर्थिक नीतियों को **समझने के लिए सकारात्मक विश्लेषण** और **मूल्यांकन के लिए मानक निर्णय की आवश्यकता होती है** ।
- उदाहरण: यह तय करने के लिए कि क्या सब्सिडी हटाई जानी चाहिए (मानक), मुद्रास्फीति पर उनके प्रभाव का विश्लेषण करना चाहिए (सकारात्मक)।

B. नीति चक्र

1. **सकारात्मक विश्लेषण:** स्थिति का वैज्ञानिक अध्ययन करें।
2. **मानक मूल्यांकन:** वांछनीय परिणाम निर्धारित करें।
3. **नीति अनुप्रयोग:** संतुलित निर्णय के साथ कार्यान्वयन करें।

C. आधुनिक एकीकरण

- आधुनिक अर्थशास्त्री सख्त पृथक्करण को अस्वीकार करते हैं; अर्थशास्त्र में तथ्य और मूल्य दोनों शामिल होते हैं।
- उदाहरण: कल्याणकारी अर्थशास्त्र दक्षता (सकारात्मक) को समानता (मानक) के साथ मिश्रित करता है।

VI. आर्थिक नीति में भूमिका

A. सकारात्मक अर्थशास्त्र

- नीति निर्माताओं के लिए **डेटा-आधारित अंतर्दृष्टि** प्रदान करता है ।
- निर्णयों के परिणामों की भविष्यवाणी करता है।
  - उदाहरण: कर कटौती → अधिक उपभोग → मुद्रास्फीति जोखिम।*

B. मानक अर्थशास्त्र

- **लक्ष्य** और **सामाजिक प्राथमिकताएं** निर्धारित करता है .
  - उदाहरण: सार्वभौमिक स्वास्थ्य सेवा, गरीबी उन्मूलन, लैंगिक समानता।*

C. संयुक्त उपयोग

- प्रभावी नीति = सकारात्मक विश्लेषण + मानक उद्देश्य।
  - उदाहरण: मूल्य स्थिरता (मानक) प्राप्त करने के लिए मौद्रिक कसावट (सकारात्मक)।*

VII. दार्शनिक आधार

A. तार्किक प्रत्यक्षवाद (20वीं शताब्दी)

- मूल्य-मुक्त वैज्ञानिक जांच की वकालत की (रॉबिन्स, फ्रीडमैन)।
- आर्थिक विवरण **अनुभवजन्य रूप से सत्यापन योग्य होने चाहिए** ।

B. मूल्य-आधारित अर्थशास्त्र (आधुनिक दृष्टिकोण)

- यह मान्यता है कि **नीति और कल्याण में स्वाभाविक रूप से नैतिक विकल्प** शामिल होते हैं ।
- अमर्त्य सेन: "अर्थशास्त्र को नैतिकता से अलग नहीं किया जा सकता।"

C. नव-कल्याण दृष्टिकोण

- सकारात्मक दक्षता विश्लेषण को मानक इक्विटी विचारों के साथ एकीकृत करता है।

VIII. उदाहरणात्मक उदाहरण और केस स्टडी

A. कराधान नीति

- सकारात्मक: उच्च कर से प्रयोज्य आय और मांग कम हो जाती है।
- मानक: प्रगतिशील कर प्रणाली को समानता को बढ़ावा देना चाहिए।

B. बेरोजगारी का मुद्दा
- सकारात्मक: स्वचालन के कारण बेरोजगारी दर में वृद्धि हुई।
- मानक: सरकार को कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम उपलब्ध कराने चाहिए।

C. पर्यावरण नीति
- सकारात्मक: कार्बन उत्सर्जन वैश्विक तापमान वृद्धि में योगदान देता है।
- मानक: प्रदूषणकारी उद्योगों को अधिक कर देना होगा।

IX. PYQ ट्रिगर पॉइंट
1. सकारात्मक और मानक अर्थशास्त्र के बीच अंतर किसने पेश किया ? **जे.एन. कीन्स (1891)**
2. किस अर्थशास्त्री ने इस बात पर जोर दिया कि अर्थशास्त्र मूल्य-मुक्त होना चाहिए ? **लियोनेल रॉबिंस**
3. किसने कहा था कि "अर्थशास्त्र दो पक्षों के बीच तटस्थ है" ? **रॉबिंस**
4. कौन सी शाखा 'क्या होना चाहिए' का अध्ययन करती है? → **मानक अर्थशास्त्र**
5. कल्याणकारी अर्थशास्त्र किस शाखा से संबंधित है ? **मानक अर्थशास्त्र**
6. सकारात्मक अर्थशास्त्र को और किस नाम से जाना जाता है? → **वर्णनात्मक/विश्लेषणात्मक अर्थशास्त्र**

X. आलोचनात्मक मूल्यांकन

A. पृथक्करण के लिए तर्क
- **निष्पक्षता** और **वैज्ञानिक कठोरता को** बढ़ावा देता है ।
- नीतिगत बहसों में **वैचारिक पूर्वाग्रह** से बचें ।

B. अलगाव के विरुद्ध तर्क
- **नीतियाँ स्वाभाविक रूप से मूल्य-संचालित होती हैं।**
- अर्थशास्त्र **मानव कल्याण और नैतिकता की अनदेखी नहीं कर सकता।**

C. समकालीन सहमति
- अर्थशास्त्र व्यवहार में **सकारात्मक (वैज्ञानिक)** और **मानक (नैतिक) दोनों है।**
- एक अच्छा अर्थशास्त्री तथ्यों और मूल्यों में संतुलन बनाता है।

XI. सारांश: एकीकृत समझ
- **सकारात्मक अर्थशास्त्र:** वर्णनात्मक, तथ्यात्मक, अनुभवजन्य ।
- **मानक अर्थशास्त्र:** निर्देशात्मक, नैतिक, कल्याण-उन्मुख।
- दोनों **एक दूसरे पर निर्भर हैं** - एक स्पष्टीकरण प्रदान करता है, दूसरा दिशा-निर्देश।
- नीति प्रासंगिकता और कल्याण अनुकूलन उनके एकीकरण पर निर्भर करते हैं।

अर्थव्यवस्था की केंद्रीय समस्याएं: कमी, विकल्प और संसाधन आवंटन

I. प्रस्तावना

A. मुख्य आर्थिक समस्या
- मूलभूत समस्या **संसाधनों की कमी** और **मानवीय आवश्यकताओं की बहुलता के कारण उत्पन्न होती है** ।
- इसलिए, अर्थशास्त्र इस बात का अध्ययन करता है कि कल्याण को अधिकतम करने के लिए **सीमित संसाधनों को प्रतिस्पर्धी उपयोगों के** बीच किस प्रकार **आवंटित किया जाता** है ।
- प्रत्येक अर्थव्यवस्था - पूंजीवादी, समाजवादी या मिश्रित - आकार या विकास से परे, केंद्रीय समस्याओं का सामना करती है।

B. बुनियादी आर्थिक मान्यताएँ
- **संसाधन दुर्लभ हैं.**
- **मानव की इच्छाएँ असीमित हैं।**
- **संसाधनों के वैकल्पिक उपयोग होते हैं।**
- **आर्थिक विकल्पों और प्राथमिकता** की आवश्यकता है ।

II. केंद्रीय समस्याओं की उत्पत्ति

A. कमी और विकल्प
- **अभाव** व्यक्तियों और समाजों को **यह निर्णय लेने के लिए बाध्य करता है** कि क्या, कैसे और किसके लिए उत्पादन किया जाए।
- **लियोनेल रॉबिन्स (1932)** द्वारा आर्थिक विश्लेषण में प्रस्तुत - अर्थशास्त्र, अभाव और विकल्प के विज्ञान के रूप में।

B. सार्वभौमिकता

- सभी आर्थिक प्रणालियों (पूंजीवादी, समाजवादी, मिश्रित) में मौजूद है।
- यहां तक कि अमीर देशों को भी कुशल श्रम, ऊर्जा या स्वच्छ पर्यावरण की कमी का सामना करना पड़ता है।

III. अर्थव्यवस्था की तीन केंद्रीय समस्याएँ

A. क्या उत्पादन करें?

- उत्पादित की जाने वाली **वस्तुओं और सेवाओं के चयन** को संदर्भित करता है ।
- **संबोधित प्रश्न:**
  - कौन सी वस्तुएँ? (आवश्यक वस्तुएँ या विलासिता)
  - कितनी मात्रा? (प्रत्येक की कितनी मात्रा)
  - उपभोक्ता और पूंजीगत वस्तुओं का कैसा मिश्रण?
- उदाहरण: एक विकासशील अर्थव्यवस्था को उपभोक्ता वस्तुओं (वर्तमान आवश्यकताओं के लिए) और पूंजीगत वस्तुओं (भविष्य के विकास के लिए) के उत्पादन के बीच निर्णय लेना होगा।
- विभिन्न वस्तुओं और क्षेत्रों के बीच **संसाधनों के आवंटन की समस्या ।**

B. उत्पादन कैसे करें?

- **उत्पादन तकनीक के चयन से** संबंधित चिंताएँ :
  - श्रम -प्रधान या पूंजी-प्रधान।
- **कारकों की उपलब्धता** और **लागत दक्षता** पर निर्भर करता है ।
- उदाहरण: भारत अधिशेष श्रम के कारण श्रम-गहन तकनीकों का उपयोग कर सकता है ; संयुक्त राज्य अमेरिका उच्च प्रौद्योगिकी के कारण पूंजी-गहन तरीकों का उपयोग करता है।*
- **लक्ष्य:** लागत न्यूनतम करना और दक्षता अधिकतम करना।

C. किसके लिए उत्पादन करें?

- समाज के विभिन्न वर्गों के बीच **वस्तुओं और आय का वितरण** निर्धारित करता है ।
- **संबोधित प्रश्न:**
  - कौन कितना उपभोग करेगा?
  - आय का वितरण कैसे किया जाएगा?
- बाजार अर्थव्यवस्था में वितरण **क्रय शक्ति पर निर्भर करता है** ;
  समाजवादी अर्थव्यवस्था में वितरण **सामाजिक कल्याण उद्देश्यों पर निर्भर करता है।**

IV. आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं में अनुपूरक समस्याएँ

A. कुशल संसाधन उपयोग की समस्या

- दिए गए संसाधनों से **अधिकतम उत्पादन** सुनिश्चित करना ।
- अपव्यय, अकुशलता और निष्क्रिय क्षमता से बचना।

B. पूर्ण रोजगार की समस्या

- **श्रम** और **पूंजी का इष्टतम उपयोग** प्राप्त करना ।
- प्रमुख समष्टि आर्थिक मुद्दा - कीन्स द्वारा बल दिया गया।

C. आर्थिक विकास की समस्या

- अर्थव्यवस्था की **उत्पादक क्षमता में** दीर्घकालिक वृद्धि।
- **पूंजी निर्माण** , **तकनीकी प्रगति** और **संस्थागत सुधार की** आवश्यकता है ।

V. केंद्रीय समस्याओं के समाधान में आर्थिक प्रणालियों की भूमिका

A. पूंजीवादी (बाजार) अर्थव्यवस्था

- **तंत्र:** मूल्य प्रणाली और बाजार शक्तियां (मांग और आपूर्ति)।
- **मार्गदर्शक सिद्धांत:** लाभ का उद्देश्य।
- **मुख्य विशेषता:** अदृश्य हाथ (एडम स्मिथ)।
- **गुण:**
  - प्रतिस्पर्धा के माध्यम से दक्षता.
  - उपभोक्ता संप्रभुता.
- **अवगुण:**
  - असमानता, बेरोजगारी, सामाजिक अन्याय।

2. समाजवादी (कमांड) अर्थव्यवस्था

- **तंत्र:** केंद्रीय योजना और राज्य नियंत्रण।
- **मार्गदर्शक सिद्धांत:** सामाजिक कल्याण और समानता।
- **गुण:**
  - कोई वर्ग संघर्ष नहीं, पूर्ण रोजगार, स्थिरता।
- **अवगुण:**
  - अकुशलता, नौकरशाही कठोरता, प्रोत्साहन की कमी।

C. मिश्रित अर्थव्यवस्था

- **तंत्र:** सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों का सह-अस्तित्व।
- **मार्गदर्शक सिद्धांत:** लाभ और कल्याण के बीच संतुलन।
- उदाहरण: भारत, फ्रांस.
- **गुण:**
  - बाजार की दक्षता को नियोजन की समता के साथ संयोजित करता है।
- **अवगुण:**
  - समन्वय संबंधी समस्याएं, आंशिक अक्षमताएं।

VI. बाजार अर्थव्यवस्था में संसाधन आवंटन का तंत्र

A. मूल्य तंत्र की भूमिका

- कीमतें उत्पादकों और उपभोक्ताओं के लिए **संकेत का काम करती हैं।**
- **यदि मांग** ↑ → **मूल्य** ↑ → **उत्पादन** ↑ , अधिक संसाधनों को आकर्षित करना।
- **यदि मांग** ↓ → **मूल्य** ↓ → **उत्पादन** ↓ , संसाधनों को जारी करना।

B. अदृश्य हाथ (एडम स्मिथ)

- स्व-विनियमित बाजार **निजी हितों को सामाजिक कल्याण** के साथ संरेखित करता है।
- लाभ की चाहत में उत्पादक अनजाने में सार्वजनिक हित को बढ़ावा देते हैं।

C. सीमाएँ

- बाजार विफलताएं: बाह्यताएं, एकाधिकार, असमानता।
- सुधार के लिए सरकारी हस्तक्षेप की आवश्यकता है।

VII. केंद्रीय समस्याओं पर आधुनिक दृष्टिकोण

A. गतिशील प्रकृति

- आज की अर्थव्यवस्थाओं को भी इन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है:
  - **पर्यावरणीय स्थिरता**
  - **तकनीकी व्यवधान**
  - **असमानता और समावेशन**
  - **वैश्विक परस्पर निर्भरता**

B. समकालीन परिवर्धन

- टिकाऊ उत्पादन कैसे सुनिश्चित किया जाए?
- विकास और समानता में संतुलन कैसे बनाएं?
- बेरोजगारी और स्वचालन से कैसे निपटें?

VIII. उदाहरणात्मक उदाहरण

A. विकासशील अर्थव्यवस्था (भारत)

- **क्या उत्पादन करें:** कृषि, बुनियादी ढांचे और आवश्यक उद्योगों को प्राथमिकता।
- **उत्पादन कैसे करें:** कार्यबल को अवशोषित करने के लिए श्रम -गहन तरीके।
- **किसके लिए उत्पादन करें:** गरीबी उन्मूलन, सार्वजनिक वस्तुओं और सब्सिडी पर ध्यान केंद्रित करें।

B. विकसित अर्थव्यवस्था (यूएसए)

- **क्या उत्पादन करें:** प्रौद्योगिकी-प्रधान, उच्च-मूल्य वाली वस्तुएं।
- **उत्पादन कैसे करें:** स्वचालन, नवाचार-संचालित।
- **किसके लिए उत्पादन करें:** उच्च आय वाले परिवार उपभोग पर हावी होते हैं; कल्याण सुरक्षा जाल सुनिश्चित करता है।

IX. सैद्धांतिक संबंध

A. उत्पादन संभावना सीमा (पीपीएफ)

- केंद्रीय समस्याओं का ग्राफिकल प्रतिनिधित्व.
- वक्र पर बिंदु → कुशल उपयोग; अंदर → अल्प उपयोग; बाहर → अप्राप्य।
- अवसर लागत और व्यापार-नापसंद को दर्शाता है।

B. अवसर लागत और विकल्प

- प्रत्येक विकल्प में **अगले सर्वोत्तम विकल्प को छोड़ना शामिल होता है।**
- सभी आर्थिक निर्णयों का केन्द्र बिन्दु।

X. PYQ ट्रिगर पॉइंट

1. किसी अर्थव्यवस्था की मुख्य समस्याएँ क्या हैं? उदाहरण सहित समझाइए।
2. मूल्य तंत्र पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में केंद्रीय समस्याओं का समाधान कैसे करता है?
3. अदृश्य हाथ' की अवधारणा किसने प्रस्तुत की? **एडम स्मिथ**
4. निम्नलिखित में से कौन सी केंद्रीय समस्या नहीं है? → **बेरोजगारी (यह व्युत्पन्न है, मूल नहीं)**
5. दुर्लभता, विकल्प और अवसर लागत के बीच संबंध स्पष्ट करें।
6. विभिन्न आर्थिक प्रणालियाँ बुनियादी आर्थिक समस्याओं का समाधान कैसे करती हैं?

XI. आलोचनात्मक मूल्यांकन

A. केंद्रीय समस्या ढांचे के लाभ

- किसी भी अर्थव्यवस्था के विश्लेषण के लिए **एकीकृत संरचना** प्रदान करता है ।
- **सूक्ष्म (व्यक्तिगत निर्णय) को वृहत् (समग्र परिणाम)** से जोड़ता है ।

B. सीमाएँ

- तर्कसंगतता और दक्षता मानता है.
- उत्पादन के सामाजिक, सांस्कृतिक और पारिस्थितिक आयामों की उपेक्षा करता है।

C. समकालीन प्रासंगिकता

- **वैश्वीकरण, पर्यावरणीय तनाव और असमानता** के तहत अभी भी मान्य है ।
- **विकास अर्थशास्त्र** और **स्थिरता अर्थशास्त्र** में अनुकूलित .

XII. सारांश एकीकरण

- **केन्द्रीय समस्याएँ अभाव और विकल्प** से उत्पन्न होती हैं ।
- वे निर्धारित करते हैं:
  a. क्या उत्पादन करना है - वस्तुओं में आवंटन।
  b. उत्पादन कैसे करें - प्रौद्योगिकी का चुनाव।
  c. किसके लिए उत्पादन करना है - उत्पादन का वितरण।
- **बाजार तंत्र, केंद्रीय योजना या मिश्रित समन्वय** द्वारा हल किया गया ।
- किसी भी अर्थव्यवस्था में **दक्षता, समानता और विकास को** समझने का आधार ।

उत्पादन संभावना सीमा (पीपीएफ): अवधारणा, बदलाव और अनुप्रयोग

I. प्रस्तावना

A. उत्पादन संभावना सीमा (पीपीएफ) का अर्थ

- **इसे उत्पादन संभावना वक्र (पीपीसी)** या **परिवर्तन वक्र** के रूप में भी जाना जाता है ।
- यह दो वस्तुओं के **विभिन्न संयोजनों को दर्शाता है जिन्हें एक अर्थव्यवस्था दिए गए संसाधनों** और **प्रौद्योगिकी के साथ** , **पूर्ण और कुशल उपयोग मानते हुए, उत्पादित कर सकती है** ।
- **अभाव की स्थिति** में **चुनाव की समस्या का** प्रतिनिधित्व करता है ।

B. उत्पत्ति

- **पॉल सैमुएलसन (1948) द्वारा** "आर्थिक विश्लेषण की नींव" में प्रस्तुत अवधारणा ।
- केंद्रीय आर्थिक समस्याओं का **ग्राफिकल प्रतिनिधित्व** प्रदान करता है ।

C. मुख्य विचार

- **अभाव → विकल्प → अवसर लागत।**
- पीपीएफ वैकल्पिक वस्तुओं के बीच व्यापार-बंद को प्रदर्शित करता है।

II. पीपीएफ की मान्यताएँ

1. **स्थिर संसाधन:** संसाधनों की मात्रा और गुणवत्ता स्थिर रहती है।
2. **पूर्ण रोजगार:** सभी संसाधनों का पूर्ण एवं कुशलतापूर्वक उपयोग किया जाता है।
3. **निश्चित प्रौद्योगिकी:** उत्पादन तकनीक में कोई परिवर्तन नहीं।
4. **दो-वस्तु मॉडल:** प्रतिनिधित्व के लिए सरलीकरण।
5. सभी वस्तुओं के उत्पादन में **संसाधन समान रूप से कुशल नहीं होते हैं ।**
6. **अर्थव्यवस्था अल्पावधि** (स्थिर स्थितियों) में संचालित होती है।

III. पीपीएफ की विशेषताएं

A. नीचे की ओर झुका हुआ

- ऋणात्मक ढलान दो वस्तुओं के उत्पादन के बीच **व्युत्क्रम संबंध को इंगित करता है।**
- एक वस्तु का अधिक उत्पादन करने के लिए, अर्थव्यवस्था को अन्य वस्तुओं का कुछ त्याग करना पड़ता है - जो **अवसर लागत को दर्शाता है** ।

B. मूल बिन्दु की ओर अवतल

- **बढ़ती अवसर लागत** के कारण - संसाधन सभी उपयोगों में समान रूप से कुशल नहीं हैं।
- जैसे-जैसे एक वस्तु का अधिक उत्पादन होता है, दूसरी वस्तु का अधिक त्याग करना पड़ता है।

C. वक्र पर, अंदर और बाहर के बिंदु

- **वक्र पर (कुशल अंक):** पूर्ण एवं कुशल उपयोग।
- **वक्र के अंदर (अकुशल बिंदु):** अल्प उपयोग या बेरोजगारी।
- **वक्र के बाहर (अव्यवहार्य बिंदु):** मौजूदा संसाधनों और प्रौद्योगिकी से अप्राप्य।

IV. बढ़ती अवसर लागत का नियम

A. संप्रत्यय

- एक वस्तु की प्रत्येक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन करने के लिए, अर्थव्यवस्था को दूसरी वस्तु की **बढ़ती मात्रा का त्याग करना होगा।**
- कारण: संसाधनों की उत्पादकता विषम होती है।

B. चित्रण

संयोजन	अच्छा X	अच्छा Y	X की अवसर लागत
ए	0	10	-
बी	1	9	1
सी	2	7	2
डी	3	4	3
ई	4	0	4

जैसे-जैसे X बढ़ता है, Y बढ़ती दर से घटता है → अवतल वक्र।

C. ग्राफिकल प्रतिनिधित्व

- **सीमांत अवसर लागत में वृद्धि** के कारण वक्र बाहर की ओर झुक जाता है ।
- **परिवर्तन के नियम को** प्रतिबिंबित करता है .

V. पीपीएफ में बदलाव

A. बाह्य बदलाव (आर्थिक विकास)

- तब होता है जब:
  - संसाधन उपलब्धता (भूमि, श्रम, पूंजी) में वृद्धि।
  - तकनीकी प्रगति.
  - बेहतर मानव पूंजी या संस्थागत दक्षता।
- **उत्पादक क्षमता में वृद्धि का** प्रतिनिधित्व करता है .
- उदाहरण: तेल की खोज, बेहतर शिक्षा, नवाचार।

B. आवक बदलाव (आर्थिक गिरावट)

- निम्न कारणों से होता है:
  - प्राकृतिक आपदाएँ, युद्ध, संसाधनों की कमी।
  - पूंजी विनाश, महामारी प्रभाव।
- **उत्पादन क्षमता में हानि को** दर्शाता है ।

C. असमान बदलाव

- यदि तकनीकी प्रगति केवल एक क्षेत्र में होती है, तो वक्र **असमान रूप से स्थानांतरित होता है** - एक वस्तु के लिए दूसरे की तुलना में अधिक बाहर की ओर।

VI. आर्थिक विकास और पीपीएफ

A. स्थैतिक बनाम गतिशील अर्थव्यवस्था

- **स्थैतिक अर्थव्यवस्था:** निश्चित पीपीएफ - कोई वृद्धि नहीं।
- **गतिशील अर्थव्यवस्था:** संचयन और नवाचार के कारण पीपीएफ का बहिर्मुखी स्थानांतरण।

B. विकास से संबंध

- **विकासशील देश:** अंदर से सीमांत की ओर बढ़ें (बेहतर उपयोग)।
- **विकसित देश:** सीमा को बाहर की ओर धकेलें (नवाचार और प्रौद्योगिकी)।

C. नीतिगत निहितार्थ

- **पूंजीगत वस्तुओं में निवेश,** उपभोग-उन्मुख उत्पादन की तुलना में पीपीएफ को अधिक तेजी से स्थानांतरित करता है।
- **वर्तमान उपभोग और भावी वृद्धि के बीच संतुलन** को दर्शाता है ।

VII. पीपीएफ के माध्यम से दक्षता अवधारणाएँ

A. उत्पादक दक्षता

- यह उपलब्धि तब प्राप्त होती है जब उत्पादन पीपीएफ पर होता है - संसाधनों की कोई बर्बादी नहीं होती।

B. आवंटन दक्षता

- यह तब प्राप्त होता है जब समाज पीपीएफ पर **वरीयताओं और कल्याण प्राथमिकताओं को प्रतिबिंबित करने वाला इष्टतम बिंदु चुनता है** ।

C. पेरेटो दक्षता

- किसी को बदतर बनाये बिना किसी को बेहतर नहीं बनाया जा सकता - पीपीएफ पर संतुलन।

VIII. पीपीएफ और अवसर लागत

A. परिभाषा

- जब कोई चुनाव किया जाता है तो **अगले सर्वोत्तम विकल्प का मूल्य छोड़ दिया जाता है** ।
- पीपीएफ दृश्य रूप से इस लागत को प्रदर्शित करता है।

B. प्रमुख संबंध

- पीपीएफ पर एक बिंदु से दूसरे बिंदु पर जाने का अर्थ है एक वस्तु के लिए दूसरी वस्तु का त्याग करना।
- अवसर लागत को पीपीएफ के ढलान से मापा जाता है।

C. गणितीय रूप

$$\text{Opportunity Cost} = \frac{\text{Loss of Good Y}}{\text{Gain of Good X}}$$

- बढ़ती ढलान → बढ़ती अवसर लागत.

IX. पीपीएफ के अनुप्रयोग

A. अर्थव्यवस्था की केंद्रीय समस्याएं

- यह बताता है **कि क्या, कैसे और किसके लिए उत्पादन करना है।**
- व्यापार-नापसंद और कुशल संसाधन आवंटन।

B. आर्थिक नियोजन

- राष्ट्रीय योजना में **लक्ष्य निर्धारण** और **संसाधन प्राथमिकता** के लिए उपयोग किया जाता है ।

C. नीति विश्लेषण

- दक्षता हानि, संसाधन बाधाओं और विकास क्षमता का मूल्यांकन करता है।

D. मैक्रोइकॉनॉमिक निहितार्थ

- बाहर की ओर बदलाव = वृद्धि; भीतर की ओर बदलाव = मंदी या आपदा।
- वक्र के अंदर = बेरोजगारी या अल्पउपयोग (कीनेसियन संदर्भ)।

X. वास्तविक दुनिया के उदाहरण

A. भारत की हरित क्रांति

- तकनीकी उन्नति → कृषि पीपीएफ में बाह्य बदलाव।

B. कोविड-19 महामारी

- संसाधन लॉकडाउन और बेरोजगारी → अस्थायी आवक बदलाव।

C. औद्योगिक नीति (मेक इन इंडिया)

- निवेश और नवाचार → संभावित बाह्य बदलाव।

XI. PYQ ट्रिगर पॉइंट

1. पीपीएफ क्या दर्शाता है? → कमी, विकल्प और अवसर लागत।
2. पीपीएफ मूल बिंदु के प्रति अवतल क्यों है? → अवसर लागत में वृद्धि।
3. पीपीएफ के बाहर की ओर स्थानांतरित होने का क्या कारण है? → आर्थिक विकास और नवाचार।
4. पीपीएफ की अवधारणा किसने पेश की? → **पॉल सैमुएलसन**
5. पीपीएफ के अंदर अंक क्या दर्शाते हैं? → संसाधनों का कम उपयोग।
6. अंदर से वक्र की ओर गति क्या दर्शाती है? → बेहतर दक्षता।

XII. मूल्यांकन और सीमाएँ

A. लाभ

- जटिल आर्थिक वास्तविकताओं को सरल बनाता है।
- बुनियादी आर्थिक अवधारणाओं को समझाने के लिए उपयोगी।
- व्यापार-नापसंद और नीतिगत निहितार्थों को समझने में सहायता करता है।

B. सीमाएँ

- केवल दो वस्तुओं को मानता है।
- बाह्य कारकों, वितरण और संस्थागत बाधाओं की अनदेखी करता है।
- कल्याण का प्रत्यक्ष आकलन नहीं किया जा सकता।
- स्थैतिक - इसमें गतिशील फीडबैक या समय अंतराल को ध्यान में नहीं रखा जाता।

XIII. सारांश एकीकरण

- **पीपीएफ** = दिए गए संसाधनों और प्रौद्योगिकी के साथ प्राप्य आउटपुट संयोजनों की सीमा।
- **मुख्य आर्थिक अवधारणाओं को** प्रदर्शित करता है : कमी, विकल्प, अवसर लागत और दक्षता।
- पीपीएफ में बदलाव **आर्थिक प्रगति या गिरावट को दर्शाता है।**
- **सूक्ष्म-स्तरीय विकल्पों को वृहद-स्तरीय विकास** से जोड़ने वाला एक शक्तिशाली विश्लेषणात्मक उपकरण ।

आर्थिक विश्लेषण में अर्थ, प्रासंगिकता और अनुप्रयोग

I. प्रस्तावना

A. अवधारणा अवलोकन

- **अवसर लागत से** तात्पर्य अगले सर्वोत्तम विकल्प के मूल्य से है, जिसे तब **त्यागना पड़ता है** जब दुर्लभ संसाधनों का किसी विशेष तरीके से उपयोग करने का विकल्प चुना जाता है।
- यह **अभाव की स्थिति** में **आर्थिक निर्णय लेने का सार है** ।
- सभी विकल्पों में अवसर लागत शामिल होती है क्योंकि संसाधन सीमित होते हैं और उनके वैकल्पिक उपयोग होते हैं।

B. उत्पत्ति

- **फ्रेडरिक वॉन वीसर** (ऑस्ट्रियाई स्कूल, 1914) ने " थ्योरी डेर गेसेलशाफ्टलिचेन" में लोकप्रिय बनाया। Wirtschaft ."
- **रॉबिन्स की अर्थशास्त्र की परिभाषा का** केंद्र (1932): अभाव के तहत विकल्प के अध्ययन के रूप में अर्थशास्त्र।

C. मौलिक सिद्धांत

"मुफ्त भोजन जैसी कोई चीज़ नहीं होती।"
भले ही कोई चीज़ मुफ़्त लगती हो, लेकिन वैकल्पिक रूप से उपयोगिता या आउटपुट के रूप में उसकी हमेशा एक अवसर लागत होती है।

II. अर्थ और परिभाषा

A. सरल परिभाषा

- अवसर लागत, किसी अन्य चीज़ को प्राप्त करने के लिए अगले सर्वोत्तम विकल्प का त्याग करने की लागत है।

B. औपचारिक परिभाषा (रॉबिन्स):

"प्रत्येक कार्य में एक विकल्प का त्याग शामिल होता है; किसी भी विकल्प की कीमत अगले सर्वोत्तम विकल्प का त्याग है।"

C. उदाहरण:

- यदि कोई किसान गेहूं उगाने के लिए भूमि का उपयोग करता है, तो अवसर लागत चावल का मूल्य है जो उसकी जगह उगाया जा सकता था।
- यदि कोई छात्र अर्थशास्त्र का अध्ययन करने में समय व्यतीत करता है, तो अवसर लागत, काम न करने के कारण खोई गई अवकाश या आय है।

III. प्रकृति और विशेषताएँ

1. **निहित लागत (हमेशा मौद्रिक नहीं) : इसमें**
   स्पष्ट (धन) और **निहित** (छोड़ा गया लाभ) दोनों लागतें शामिल होती हैं ।
2. **सापेक्ष अवधारणा :**
   अवसर लागत उपलब्ध विकल्पों पर निर्भर करती है - यह संदर्भ के साथ बदलती है।
3. **व्यक्तिपरक अवधारणा :**
   वरीयताओं और संसाधनों के आधार पर व्यक्तियों में भिन्न होती है।
4. **भविष्योन्मुख :**
   भविष्य के विकल्पों और संभावित लाभों से चिंतित।
5. **सार्वभौमिक प्रयोज्यता :**
   उपभोक्ताओं, उत्पादकों, सरकारों और संपूर्ण अर्थव्यवस्थाओं पर लागू होती है।

IV. अवसर लागत के प्रकार

A. स्पष्ट अवसर लागत

- एक विकल्प में किया गया वास्तविक मौद्रिक व्यय।
  - उदाहरण: श्रमिकों को दी गई मजदूरी, कच्चे माल की लागत।

B. अंतर्निहित अवसर लागत

- फर्म के स्वामित्व वाले और उसके द्वारा उपयोग किये जाने वाले संसाधनों का मूल्य।
  - उदाहरण: स्वामी की निवेशित पूंजी पर छोड़ा गया ब्याज।

C. सामाजिक अवसर लागत

- जब संसाधनों का उपयोग किसी अन्य उद्देश्य के बजाय एक उद्देश्य के लिए किया जाता है तो समाज को त्याग करना पड़ता है।
  - उदाहरण: सैन्य व्यय से शिक्षा और स्वास्थ्य के लिए धनराशि कम हो जाती है।

D. व्यक्तिगत अवसर लागत

- किसी पूर्वनिर्धारित विकल्प के कारण संभावित उपयोगिता की व्यक्तिगत हानि।
  - उदाहरण: उद्यमिता के स्थान पर सरकारी नौकरी चुनना।

अवसर लागत और विकल्प के बीच संबंध

A. कमी → विकल्प → अवसर लागत

- अभाव विकल्प को बाध्य करता है; विकल्प त्याग की ओर ले जाता है।
- प्रत्येक निर्णय यह दर्शाता है कि समाज किस चीज को अधिक महत्व देता है।

B. सीमांत निर्णय लेना

- तर्कसंगत निर्णयकर्ता **सीमांत लाभ बनाम सीमांत अवसर लागत का मूल्यांकन करते हैं।**
- इष्टतम निर्णय जहां MB = MC (अवसर लागत)।

C. संसाधन आवंटन के साथ अंतर्संबंध

- संसाधन दुर्लभ हैं → आवंटन में समझौता शामिल है।
- अवसर लागत कुशल आवंटन के लिए **तर्कसंगत आधार प्रदान करती है।**

VI. अवसर लागत और उत्पादन संभावना सीमा (पीपीएफ)

A. कनेक्शन

- पीपीएफ दृश्य रूप से **अवसर लागत को वक्र के ढलान** के रूप में दर्शाता है ।
- पीपीएफ के साथ आगे बढ़ने से पता चलता है कि एक वस्तु को अधिक प्राप्त करने के लिए दूसरी वस्तु का कितना त्याग किया गया।

B. चित्रण

संयोजन	अच्छा X	अच्छा Y	X की अवसर लागत
ए	0	10	-
बी	1	9	1
सी	2	7	2
डी	3	4	3

- जैसे-जैसे उत्पादन A से D की ओर स्थानांतरित होता है, अवसर लागत **बढ़ती जाती है** , जो **अवसर लागत में वृद्धि के नियम की पुष्टि करती है** ।